# पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः

## अथ रामद्वादशीव्रतविधानम्

दुर्वासा उवाच

ज्येष्ठमासेऽप्येवमेवं संकल्प्य विधिना नरः। अर्चयेत् परमं देवं पुष्पैर्नानाविधैः शुभैः॥१॥
नमो रामाभिरामाय पादौ पूर्वं समर्चयेत्। त्रिविक्रमायेति कटिं धृतविश्वाय चोदरम्॥२॥

अध्याय–४५

## ज्येष्ठ शुक्ल राम द्वादशी व्रत विधि और माहात्म्य

इसी प्रकार से ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष द्वादशी के दिन विधिवद् उपवास करते हुए संकल्पपूर्वक विविध प्रकार के शुभ पुष्पों से परमदेव का पूजन करना चाहिए।।१।।

वहाँ पूजन क्रम इस प्रकार अपनाना चाहिए सर्वप्रथम 'ॐ नमो रामाभिरामाय' मन्त्र से पादों का, 'ॐ त्रिविक्रमाय नमः' मन्त्र से कटि का और 'ॐ धृतविश्वाय नमः' मन्त्र से उदर का पूजन करना चाहिए।।२।।

उरः संवत्सरायेति कण्ठं संवर्त्तकाय च। सर्वास्त्रधारिणे बाहू स्वनाम्नाऽब्जरथाङ्गकौ।।३।।
सहस्त्रशिरसेऽभ्यर्च्य शिरस्तस्य महात्मनः। एवमभ्यर्च्य विधिवत् प्रागुक्तं कुम्भं विन्यसेत्।।४।।
प्राग्वद् वस्त्रयुगच्छन्नौ सौवर्णौ रामलक्ष्मणौ। अर्चयित्वा विधानेन प्रभाते ब्राह्मणाय तौ।
दातव्यौ मनसा काममीहता पुरुषेण तु।।५।।
अपुत्रेण पुरा पृष्टो राज्ञा दशरथेन च। पुत्रकामपरः पश्चाद् वसिष्ठः परमार्चितः।।६।।
इदमेव विधानं तु कथयामास स द्विजः। प्राग्रहस्यं विदित्वा तु स राजा कृतवानिदम्।।७।।
तस्य पुत्रः स्वयं जज्ञे रामनामा सुतो बली। चतुर्द्धा सोऽव्ययो विष्णुः परितुष्टो महामुने।
एतदैहिकमाख्यातं पारत्रिकमतः शृणु।।८।।
तावद् भोगान् भुञ्जते स्वर्गसंस्थो यावदिन्द्रा दश च द्विद्विसंख्या।
अतीतकाले पुनरेत्य मर्त्त्यो भवेत राजा शतयज्ञयाजी।
नश्यन्ति पानानि च तस्य पुंसः प्राप्नोति निर्वाणमलं च शाश्वतम्।।९।।

।।इति श्रीवराहपुराणे भगवच्छास्त्रे पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः।।४५।।

—❀—

फिर 'ॐ सम्वत्सरांय नमः' मन्त्र से हृदय का, 'ॐ सम्वर्त्तकाय नमः' मन्त्र से कण्ठ का, 'ॐ सर्वास्त्रधारिणे नमः' मन्त्र से भुजाओं का और अपने नाम से पद्म और चक्र का अर्थात् 'ॐ पद्मधारिणे नमः' से पद्म का तथा 'ॐ चक्रिणे नमः' मन्त्र से चक्र का पूजन करना चाहिए।।३।।

फिर ॐ सहस्त्रशिरसे नमः' मन्त्र से उस महात्मा के सिर का पूजन करना चाहिए। इस तरह पूजन करने के बाद पूर्व कथित विधि से घट स्थापित करना चाहिए।।४।।

सविधि पूर्वकथितानुसार दो वस्त्रों से आच्छादित राम और लक्ष्मण की स्वर्णमूर्त्ति का पूजन करते हुए मन में अपनी कामना को धारण कर उपासक को प्रातः काल किसी ब्राह्मण के लिए उन दोनों मूर्त्ति को घट सहित दान कर देना चाहिए।।५।।

पुरातन काल में राजा दशरथ, जो पुत्रहीन थे, के द्वारा पुत्र प्राप्ति की कामना से पूछन पर उन राजा द्वरा परम पूजित उन द्वित वशिष्ठ ने यही व्रत की विधि का विधान उनको भी बतलाया था। इस रहस्य की जानकारी होने पर उन राजा दशरथ ने यह व्रत धारण किया था।।६-७।।

हे महामुने! इस व्रत का ही प्रभाव था कि स्वयं वे अव्यय विष्णु अपने चार स्वरूपों में विभक्त हुआ तथा स्वयं राम नाम से उनके बलवान् पुत्र के रूप में अवतरित हुए। इस प्रकार से इस व्रत का इहलौकिक फल बतलाया गया है। आगे पारलौकिक फल कहता हूँ, सुनो।।८।।

इस व्रत के उपासक पुरुष स्वर्ग में चतुर्दश इन्द्रों के काल पर्यन्त दिव्य भेगों का उपभोग करता है। फिर इस काल की समाप्ति पर वह उपासक मनुष्य योनि में राजा होकर ही सौ यज्ञ करने वाला होता है। जिससे उस उपासक के समस्त पापों का नाश हो जाता है। फिर वह शाश्वत मोक्ष की प्राप्ति करने में सफल होता है।।९।।

*।।इस प्रकार भगवच्छास्त्र श्रीवराहपुराण में ज्येष्ठ शुक्ल राम द्वादशी व्रत विधि और माहात्म्य नामक पैंतालिसवाँ अध्याय बिहार प्रान्त के सहरसामण्डलान्तर्गत दोरमामूलग्रामसम्वासी श्रीमत्सूर्यनारायणकुलभूषण डॉ. सुरकान्तझा द्वारा वाराणसी के तारामन्दिर में सुसम्पन्न हुआ।।४५।।*

❖❖❖